"Knowledge Scholar"
An International Peer Reviewed E-Journal Of Multidisciplinary Research
Volume: 07, Issue: 04, Jul. – Aug. 2020 eISSN NO. 2394-5362
Impact Factor (SJIF) – 5.266

राजस्थान पर्यटन : धौलपुर - बाड़ी के ऐतिहासिक और धार्मिक स्थलों का सर्वेक्षण

देवीलाल मीना
सहायक आचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
बाड़ी, धौलपुर, राजस्थान

सारांश:- राजस्थान वीर वीरांगनाओं की धरा रही है जिसकी माटी के कण-कण में इतिहास अपनी गंध बिखेर रहा है। इसके हर स्थान और कस्बे का अपना अनूठा इतिहास है। राजस्थान की संस्कृति का स्वरूप गौरवमयी इतिहास महल किले बाबड़ियाँ एवं हवेलियां जीवन के उल्लास से जुड़े मेले और त्यौहार लोक नृत्य एवं लोक संगीत यहां का सुरम्य परिवेश और रेत के विशाल धोरे सभी कुछ इस कदर आकर्षक है कि पर्यटक इस वीर धरा पर बार-बार आना चाहते हैं। मेहमान नवाजी की शानदार परंपराओं के चलते राजस्थान में पर्यटन प्रारंभ से ही यहां की परंपराओं का एक हिस्सा बन गया है। इसी कारण राजस्थान पर्यटकों का पसंदीदा राज्य बना हुआ है।

अध्ययन क्षेत्र:- क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान देश का सबसे बड़ा राज्य है। देश के उत्तर पश्चिमी भाग में स्थित राज्य का कुल क्षेत्रफल 342239 वर्ग किलोमीटर है। लेकिन हमने अपने अध्ययन के लिए पूर्वी राजस्थान के धौलपुर बाड़ी क्षेत्र को चुना है। धौलपुर जिला लगभग 3034 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। 3034 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में इतिहास कलात्मक रूपी हिलोरे ले रहा है इन कलात्मक लहरों की ओर पर्यटन की दृष्टि से जनमानस का ध्यान आकृष्ट करने के सार्थक प्रयास नहीं किए गए हैं। इसलिए धौलपुर बाड़ी पर्यटन के मानचित्र पर अपने लिए एक उपयुक्त जगह नहीं ले पाए हैं। तालाब ए शाही झील किला गढ़ दमोह झरना झीरी गांव की बगिया

बाबा बिशन गिरी का पावन धाम कुछ ऐसी ऐतिहासिक और धार्मिक धरोहर हैं जो व्यापक प्रचार-प्रसार का इंतजार में हैं।

विधि तंत्र:- धौलपुर बाड़ी क्षेत्र का ऐतिहासिक और धार्मिक स्थलों का विस्तृत अध्ययन करने के लिए और तथ्य संकलन में विशेष रूप से द्वितीयक स्रोतों का सहारा लिया गया है। यह द्वितीयक स्रोत व्यक्तिगत और सार्वजनिक प्रतिष्ठानों द्वारा प्राप्त किए गए हैं जैसे पर्यटन विकास निगम जयपुर, टूरिस्ट रिसेप्शन सेंटर जयपुर, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय जयपुर, पत्र पत्रिकाओं और समाचार पत्र इत्यादि से प्राप्त सूचना।

राजस्थान में पर्यटन विकास के संस्थागत प्रयास:- राजपूताना की रियासतो का एकीकरण के साथ ही राज्य का पर्यटन विकास को गति मिली। सन 1955 में राज्य में पर्यटन निदेशालय की स्थापना की गई जिसका मुख्यालय जयपुर में स्थित है। पर्यटन विकास को बढ़ावा देने के लिए 1 अप्रैल 1979 को राजस्थान पर्यटन विकास निगम आरटीडीसी की स्थापना की गई और इसका मुख्यालय जयपुर में बनाया गया। राज्य में पर्यटन विकास के लिए आरटीडीसी ही उत्तरदायी है। कहा जाता है कि भारत भ्रमण के लिए आने वाला हर तीसरा पर्यटक राजस्थान अवश्य आता है। पर्यटन राज्य में विदेशी मुद्रा अर्जित करने वाला दूसरा सबसे बड़ा उद्योग है।[i] विदेशी पर्यटकों की दृष्टि से राजस्थान का भारत में पांचवा स्थान है। राजस्थान में सर्वाधिक विदेशी पर्यटक जयपुर में आते हैं उदयपुर का इस मामले में दूसरा स्थान है। राज्य में सर्वाधिक पर्यटक मार्च के महीने में और सबसे कम जून के महीने में आते हैं। पर्यटन को मजबूती प्रदान करने के उद्देश्य से 1989 में मोहम्मद यूनुस कमेटी की रिपोर्ट के आधार पर इसे उद्योग का दर्जा दिया गया। इस प्रकार राजस्थान पर्यटन को उद्योग का दर्जा प्रदान करने वाला देश का पहला राज्य बना।

राजस्थान पर्यटन का लोगो :- सत्ता परिवर्तन के साथ ही पर्यटन विभाग का लोगो भी बदल दिया गया है। वसुंधरा राजे सरकार के समय वर्ष 2016 में "जानें क्या दिख जाए" को लोगो के रूप में चुना गया था। लेकिन गहलोत सरकार ने इसे बदलकर 31 जनवरी 2019 को फिर से

"पधारो म्हारो देश" को ही लोगो के रूप में चुना है। "पधारो म्हारो देश" 1993 में लोगो के रूप में चुना गया था और 2007 तक यही पर्यटन विभाग के लोगो के रूप में उसकी पहचान बना रहा। 2008 में इसे बदलकर "कलरफुल राजस्थान" कर दिया गया था लेकिन वर्तमान में "पधारो म्हारो देश" राजस्थान पर्यटन का लोगो है।

तालाब ए शाही:- धौलपुर जिला मुख्यालय से 30 किलोमीटर और करौली जिला मुख्यालय से करीब 75 किलोमीटर दूर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 11 बाड़ी मार्ग पर खानपुर मीणा गांव के समीप एक बेहद मनमोहक जील है। इस झील के किनारे पर खानपुर के महल स्थित हैं । झील जितनी मनमोहक है इसके निर्माण की कहानी भी उतनी ही दिलचस्प बताई जाती है। कहा जाता है कि इस मनोरम झील का निर्माण मुगल बादशाह शाहजहां के लिए उसके सालेसालेह खान के द्वारा शिकारगाह के रूप में करवाया गया था। झील और इसके महलों की देखभाल का जिम्मा धौलपुर महाराजा के पास था। कभी डाकुओं के खौफ का पर्याय रही चंबल और इसकी घाटियाँ अपने में बेहद खूबसूरत मुगलकालीन ऐतिहासिक संरचना तालाब शाही को समेटे हुए हैं लेकिन इस मुगलकालीन शिल्प के बारे में अधिकांश लोगों को कोई जानकारी नहीं है। 1617 में तालाब शाही नामक झील का जब निर्माण किया गया उस वक्त यह इलाका जंगल के रूप में अवस्थित था। जंगल की वजह से इस इलाके में विभिन्न प्रकार के पक्षी देखे जा सकते हैं। आज भी यहां कई प्रकार के प्रवासी पक्षी सर्दियों के मौसम में अक्सर देखने को मिल जाते हैं। इस ऐतिहासिक स्थल के बारे में अधिक जानकारी ना होने के कारण ही यहाँ पर्यटकों का आना जाना बेहद ही कम है। समीप के लोग ही इस स्थल के भ्रमण के लिए आते हैं। मुगल साम्राज्य के विस्तार के साथ ही उनकी स्थापत्य कला भी अपने विकास के सर्वोच्च शिखर पर पहुंच गई।[ii] सजावट के लिए लाल पत्थरों को काटकर फूल पत्तियों के आकार में बनाकर उन्हें इमारतों पर सजाया जाता था। यहां जो गुंबद बनाए गए हैं उन्हें विशेष रूप से कलश से सजाया गया है जो यहां के स्थापत्य में चार चांद लगाते हैं। मुगल शासन काल में लाल पत्थर का स्थापत्य कला में अधिकाधिक उपयोग किया गया था। हुमायूँ के मकबरे और दिल्ली के लाल किले में भी धौलपुर के लाल पत्थर का ही प्रयोग किया गया है। तालाब ए शाही मुगल काल की सबसे सुंदर कलाकारी मानी जाती है। इस झील के

समीप ही महाराजा उदय भान सिंह द्वारा खानपुर का महल बनवाए गए स्वतंत्रता का बाद महाराजा उदय भान सिंह का महलों को भारत सरकार का सुपुर्द कर दिया गया। लकिन वर्तमान में यहां का महल राज्य सरकार का पुरातत्व विभाग का धीन हैं और सरकारी गेस्ट हाउस का तौर पर इस्तेमाल किए जा रहे हैं । यह ऐतिहासिक स्थल पर्यटन का एक महत्वपूर्ण केंद्र का रूप में विकसित किया जा सकता है सिर्फ थोड़ी देखभाल और इसका प्रचार-प्रसार की आवश्यकता है।

किला गेट बाड़ी :- बाड़ी एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल है जिस 1518 में मेवाड़ का महाराणा सांगा और दिल्ली सुल्तान इब्राहिम लोदी का बीच हुए युद्ध का लिए जाना जाता है । लकिन बहुत कम लोग इस युद्ध का वास्तविक कारण की जानकारी रखते हैं । बाड़ी का यह किला गेट राजस्थान का एकमात्र ऐसा प्रवेश द्वार है जो फगान शैली में बना है[iii] और इसी किला गेट पर धिकार करने को लेकर 1518 में बाड़ी का युद्ध हुआ । यह ऐतिहासिक किला गेट सरकारी दुर्दशा का शिकार हो गया है और आज पनी बदहाली पर आंसू बहा रहा है । न्यथा थोड़ी सी देखभाल से किला गेट पर्यटन केंद्र का रूप में विकसित किया जा सकता है ।

शेरगढ़ किला :- आगरा मुंबई राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 3 पर राजस्थान मध्य प्रदेश की सीमा पर शेरगढ़ किला स्थित है । यह राजपूताना का ंतिम किला माना जाता है। इतिहास की बात करें तो यह किला 3000 वर्ष से धिक पुराना है जो ब खंडहर का रूप में तब्दील हो गया है। इस किले का निर्माण 1532 में मारवाड़ नरेश मालदेव ने करवाया था । तत्पश्चात फगान शेरशाह सूरी ने इस किले पर आक्रमण कर इस पर पना कब्जा कर लिया और 1540 में इस किले का जीर्णोद्धार करवाया । तभी से इस किले को शेरगढ़ का नाम से जाना जाता है। बीसवीं शताब्दी तक इस किले का उपयोग किया जाता रहा । यह किला मंत्रमुग्ध करने वाली छवियों हिंदू देवी-देवताओं की सुंदर नक्काशीदार मूर्तियों और नाजुक जैन रूपांकनों से सजा हुआ है। इस किले में चार दरवाजे हैं लकिन इस्तेमाल किया जाने वाला दरवाजा पूर्व दिशा में है शेरगढ़ किले में एक हनुमान मंदिर कई महल आंगन एक मकबरा और कई खंडहरनुमा संरचनाऐं हैं।[iv] इस किले की खास बात यह भी है कि यह चंबल नदी का किनारे पर बनाया गया है। शेरगढ़ एक प्रकार का जलकिला है जो

कि चारों तरफ पानी स□सुरक्षित है क्योंकि परवन नदी किलेबंदी क□ चारों ओर एक नहर की संरचना बनाती है। पहले□यह किला एक धार्मिक स्थल था और भगवान शिव को समर्पित था।

मचकुंड :- धौलपुर जिले□का प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थल है इसे□सभी प्रकार क□ तीर्थों का भांजा कहा जाता है। देवताओं स□ वरदान लेकर महाराजा मांधाता क□ पुत्र महाराज मुचकुंद श्यामाश्वल पर्वत की एक गुफा में आकर सो गए। मगध नरेश जरासंध न□ मथुरा पर आक्रमण किया। जरासंध का साथ म्लेच्छ देश क□ राजा कालियावन न□ दिया जिसे□ भगवान शंकर स□ युद्ध में □ जय□ का वरदान मिला था। भगवान शंकर क□ वरदान को पूरा करने□क□ लिए ही कृष्ण रणक्षेत्र छोड़कर भाग गए लेकिन कालियावन न□ उसका पीछा किया। कालियावन श्यामाश्वल पर्वत की गुफा में आ गए जहां महाराजा मुचकुंद सो रहे□थे□[v] कृष्ण न□ □ पनी पीतांबरी महाराज मुचकुंद क□ ऊपर डाल दी और स्वयं एक चट्टान क□ पीछे□छिप गए। कालियावन न□ दंभ में आकर मुचुकुंद को कृष्ण समझकर युद्ध क□ लिए ललकारा। मुचकुंद जागे□और उनक□ नेत्रों की ज्वाला स□ कालियावन भस्म हो गया। ऐसी मान्यता है कि मुचकुंड में स्नान करने□स□ चर्म रोग सम्बंधित पीड़ाओं स□ छुटकारा मिल जाता है। वैज्ञानिक भी इस बात स□ सहमत हैं और मानते□हैं कि मुचुकुंड में बरसात क□ दिनों में पहाड़ों स□ पानी आकर एकत्रित होता है जिसमें गंधक और □ न्य रासायनिक पदार्थ मिले□होते□हैं जिससे□ चर्म रोगों को ठीक करने□में सहायता मिलती है। सिखों क□ छठे□गुरु हरगोबिंद सिंह जी 1622 में ग्वालियर स□ आते□हुए यहां ठहरे□थे□उन्होंने□यहां तलवार क□ एक ही वार स□ शेर□ का शिकार किया था। उनकी स्मृति में यहां शेर□ शिकार गुरुद्वारा निर्मित है जो आकर्षक और भव्य है।

दमोह झरना :- धौलपुर जिले□क□ सरमथुरा कस्बे□स□ लगभग 5 किलोमीटर दूर घने□जंगलों क□ बीच स्थित है। यह एक मनोहारी पर्यटक स्थल है वर्षा ऋतु क□ दौरान इसका आकर्षण और भी बढ़ जाता है। यहां एक कुआं भी है जिसकी फुहार□ 300 फीट ऊंचाई स□ नीचे□कुए में गिरती हैं। दमोह एक प्राकृतिक जलप्रपात है[vi] जो हरे□भरे□वृक्षों स□ आच्छादित घाटीयों क□ बीच लगभग ढाई सौ फीट ऊंचाई स□ गिरता है। वैदिक कालीन चर्णावती नदी झरने□क□ पास स□ गुजरती है। □ वसादी

शैलों सबना यह झरना लगभग 900 मीटर वृत्ताकार तथा ऊपर सनीचतक 250 फिट गहरा पहाड़ी कटाव इतना खूबसूरत है कि दर्शक इसदख रोमांचित होतहैं।

झीरी :- चम्बल नदी कतट पर बसा सरमथुरा क्षत्र का एक प्रसिद्ध गाँव है। करीब 5 दशक पहल राजस्थान उत्तर प्रदश और मध्यप्रदश कमुख्य व्यापारिक केंद्रों में झीरी गांव का महत्वपूर्ण स्थान था। यह विभिन्न प्रकार कखाद्यान्नों नाजों और वन संपदा का प्रमुख व्यापारिक केंद्र था। आज गाँव में जर्जर हो रही ऐतिहासिक हवलियां और गोदाम इस बात की गवाही दरहहैं। बीहड़ क्षत्र में बसगाँव में बनबड़बड़भंडारण केंद्र को दखकर यह दाजा लगाया जा सकता है कि गाँव दश कसबससमृद्ध गाँवों में सएक रहा होगा।

गाँव में पशु सम्पदा की धिकता होनकारण झीरी गाँव का दशी घी दश भर में विख्यात था। यहाँ घी की खरीद फरोख्त कलिए मंडी लगती थी। जयपुर दिल्ली आगरा ग्वालियर तक कव्यापारी यहाँ खरीददारी कलिए आतथऔर पनऊँटों पर घी लादकर दूर प्रदशों में लजाकर व्यापार करतथ।[vii]

व्यवस्थाओं कनजरदाज रवैयकचलतऐतिहासिक झीरी गाँव की सुविधाएं धीरधीरसमाप्त होती चली गई। परिवहन सुविधाओं कभाव कचलतविकास कोसों दूर होता चला गया।

झीरी गाँव की भौगोलिक परिस्थितियों को दखतहुए यहाँ विकास की पार सम्भावना मौजूद हैं। गाँव की सबसखास बात यह है कि यहाँ कलोगों द्वारा ऑर्गेनिक खती की जाती है।

गाँव की ऐतिहासिक हवलियों को हरिटज श्रणी में रख कर विकसित किया जा सकता है। इसक लावा गाँव को मध्यप्रदश सजोड़नकलिए नियमानुसार नावों का संचालन शुरू कर जलमार्ग विकसित किए जा सकतहैं।

[i] लक्ष्मीनारायण नाथूरामका: राजस्थान की □ र्थव्यवस्था

[ii] राजस्थान दर्शन प्राइम पब्लिकेशन भीलवाड़ा

[iii] दैनिक नवज्योति धौलपुर □ंक

[iv] राजस्थान पत्रिका धौलपुर

[v] राजस्थान का इतिहास और संस्कृति एन्सिक्लोपीडिआ हुकुमचंद जैन एवं नारायण माली पृष्ठ संख्या 273

[vi] राजस्थान सुजस संदर्भिका पृष्ठ संख्या 546

[vii] राजस्थान पत्रिका धौलपुर